समाज सुधार में राजा राममोहन राय की भूमिका

डॉ० दीपा कुमारी

भारतीय समाज को सुन्दर बनाने में राजा राममोहन राय का मूर्धन्य स्थान है। उन्होंने समाज–सुधार के क्षेत्र में एक क्रांति को जन्म दिया। उनके समय में भारतीय समाज में अनेक कुप्रथाएँ विद्यमान थीं। तत्कालीन भारतीय नारी का सम्पूर्ण जीवन नाना प्रकार के दुःखों से घिरा रहता था। बाल–विवाह, जाति–प्रथा, कन्या–वध, सती–प्रथा, ये सभी रूढ़ियाँ लम्बे समय से अनवरत रूप से चली आ रही थीं। विदेशों से सम्बन्ध स्थापित करना अनुचित माना जाने लगा था। लोग कूप–मण्डूक बने हुए थे। धर्मशास्त्रों का भँवरजाल पुरोहितों के पाखण्ड से न सिर्फ गतिमान हो रहा था, अपितु सम्पूर्ण स्त्री जीवन कठोरता के कारागार में कराह रहा था। इनके कारण ही समाज टुकड़ों में बँट गया और एकत्व भाव बलशाली न हो सका। यह एक कटु सत्य है कि भारतीय सामाजिक संगठन की ये सभी कमजोरियाँ मुस्लिम आक्रान्ताओं के समक्ष हिन्दुओं की पराजय का एक मुख्य कारण रही थी।

'राजा राममोहन राय आधुनिक भारत के स्त्री स्वातन्त्र्य के अग्रदूत माने जा सकते हैं। उन्होंने स्त्रियों को पुरूषों के समान अधिकार दिलाने का पुरजोर प्रयत्न किया। वे स्त्रियों को हीन दृष्टि से देखने वालों के इस तर्क से सहमत नहीं थे कि स्त्रियों का ज्ञान सीमित होता है। उनका यह विश्वास था कि जब स्त्रियों को शिक्षा से वंचित रखा जाता है, तो फिर उनके ज्ञान को संकुचित बताने का प्रयत्न अनुचित ही नहीं, वरन् अन्यायपूर्ण भी है। वे भारतीय स्त्रियों को लीलावती, गार्गी, मैत्रेयी आदि के समान विदुषी बनाने की प्रेरणा देते थे।